कुत्ते मनुष्य की भावनाओं को पहचानते हैं

कुत्ते पालने वाले अक्सर बताते हैं कि उनके कुत्ते उनकी भावनाओं को समझते हैं। अब वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन के ज़रिए इस विश्वास को बल दिया है।

बायोलॉजी लेटर्स में प्रकाशित शोध पत्र में नतालिया अल्बुकर्क और उनके साथियों ने बताया है कि उन्होंने विभिन्न नस्लों के 17 वयस्क कुत्तों पर यह जानने के लिए परीक्षण किया था कि क्या वे मनुष्यों व अन्य कुत्तों के चेहरों और आवाज़ों में भावनात्मक हाव-भाव को पहचान पाते हैं। यह एक उच्चतर संज्ञान क्षमता मानी जाती है क्योंकि इसमें दो अलग-अलग संवेदनाएं शामिल होती हैं।

परीक्षण में प्रत्येक कुत्ते को दो सत्रों में शामिल किया गया था। परीक्षण के दौरान प्रत्येक कुत्ते को दो पर्दों के सामने खड़ा किया गया। इन पर्दों में से एक पर कोई अपरिचित चेहरा दर्शाया गया था जो या तो प्रसन्न था या

खिन्न था। दूसरे पर्दे पर वही चेहरा क्रोधित या आक्रामक मुद्रा में था। जब ये चित्र दिखाए जा रहे थे तब साथ में शोधकर्ताओं ने मात्र एक ध्वनि भी सुनाई। यह ध्वनि या तो किसी कुत्ते के भौंकने की थी या किसी अपरिचित मनुष्य द्वारा बोली जा रही पुर्तगाली भाषा की थी (परीक्षण में शामिल किसी भी कुत्ते का पुर्तगाली भाषा से कभी कोई संपर्क नहीं हुआ था) या कोई उदासीन ध्वनि थी।

कुत्तों ने किसी चेहरे (कुत्ते या मनुष्य) को तब ज़्यादा लंबे समय तक देखा जब चेहरे के हाव-भाव और ध्वनि के बीच तालमेल था। अन्य स्तनधारियों में संज्ञान क्रिया की जांच के लिए आम तौर पर यही विधि इस्तेमाल की जाती है और लगभग मानक विधि मानी जाती है। इसका आशय होता है कि कुत्ता चेहरे के हाव-भाव और ध्वनि के बीच के सम्बंध को समझ रहा है।

कुत्तों का प्रदर्शन तब सबसे बेहतर रहा जब उन्हें किसी साथी कुत्ते का चित्र दिखाया जा रहा था। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि कुत्ते मनुष्यों की अपेक्षा अन्य कुत्तों की शक्ल देखना ज़्यादा पसंद करते हैं।

यह पहली बार है कि मनुष्य से इतर किसी अन्य प्रजाति में चेहरे और ध्वनि की अभिव्यक्तियों को मिलाकर समझने की क्षमता दर्शाई गई है। यही वह क्षमता है, जिसकी बदौलत पालतू कुत्ते अपने पारिस्थितिक वास - यानी मनुष्यों के घरों - में बखूबी जीवित रह पाते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***